Toppersnotes
Unleash the topper in you

2nd – ग्रेड

वरिष्ठ अध्यापक

राजस्थान लोक सेवा आयोग (RPSC)

प्रथम – प्रश्न पत्र

भाग – 1

सामान्य अध्ययन (राजस्थान)

SIERRA INNOVATIONS

राजस्थान का इतिहास, कला एवं संस्कृति

1.	गुर्जर प्रतिहार व परमार वंश	1
2.	चौहानों का इतिहास	4
3.	मेवाड़ का इतिहास	18
4.	राठौड़ राजवंश एवं मारवाड़ का इतिहास	34
5.	आमेर का इतिहास	40
6.	राजस्थान में 1857 का विद्रोह	56
7.	राजस्थान में राजनीतिक जागृति	62
8.	प्रजामंडल आंदोलन	70
9.	किसान आंदोलन	79
10.	जनजातीय आंदोलन	87
11.	राजनीतिक एकीकरण	91
12.	राजस्थान के संत एवं लोक देवी-देवता	99

13.	राजस्थान की स्थापत्य एवं शिल्प कला	114
14.	राजस्थान की चित्रकला	133
15.	राजस्थान के मेले और त्यौहार	144
16.	राजस्थान के रीति-रिवाज एवं प्रथाएं	153
17.	राजस्थान के आभूषण एवं वेशभूषा	159
18.	राजस्थान के लोक गीत	164
19.	राजस्थान के लोक नृत्य	176
20.	राजस्थानी भाषा एवं बोलियाँ	184
21.	राजस्थान का साहित्य	189
22.	राजस्थान की प्राचीन सभ्यताएं	201

1

Chapter

गुर्जर प्रतिहार वंश व परमार वंश (6 वीं शताब्दी से 12 वीं शताब्दी तक)

- प्रतिहार का अर्थ द्वारपाल होता है।
- गर्जर-प्रतिहारों मे गुर्जर जाति का प्रतीक न होकर एक क्षेत्र/जगह विशेष का प्रतीक है।
- चीनी यात्री हवेंसाग ने भी गुर्जर-प्रतिहार मे गुर्जर जगह का प्रतीक है व अपनी पुस्तक सी.यू.की. मे लिखा है कि प्रतिहार गुजरात की सीमा के सुरक्षा प्रहरी थे।

एहोल अभिलेख

- सर्वप्रथम गुर्जर जाति का उल्लेख एहोल अभिलेख मे है।
- एहोल अभिलेख चालुक्य राजा पुलकेशियन द्वितिय का है जिसे रबी किर्ति जैन द्वारा 633-34 ई. मे संस्कृत भाषा मे लिखा गया।
- गुर्जर प्रतिहार शासक स्वयं को राम के पुत्र कुश का वंशज मानते है अतः इतिहास मे सुर्यवंशी कहलाये ।
- मुहणौत नैणसी के अनुसार भारत में गुर्जर प्रतिहारो कि 26 शाखाए है जिनमे से राजस्थान मे मण्डोर और भीनमाल मुख्य है।

स्थापना

- गुर्जर प्रतिहारों का **(मंडोर शाखा)** संस्थापक **हरिशचन्द्र** था।
- गुर्जर प्रतिहारो की प्रारम्भिक राजधानी मण्डोर थी।
- मण्डोर वर्तमान मे जोधपुर में स्थित है।
- हरिशचन्द्र के पुत्र रज़िल से ही गुर्जर प्रतिहार वंश की वंशावली प्रारम्भ होती है।
- रज़िल के **पौत्र नागभट्ट प्रथम** ने भीनमाल को जीता था।

निम्नलिखित में से कौन-सा शासक गुर्जर-प्रतिहार राजवंश से संबंधित नहीं है ? **[RAS-05.08.2018]**

(1) नागभट्ट-II
(2) महेन्द्रपाल।
(3) देवपाल
(4) भरत्रभट्ट -1

Ans. [4]

नागभट्ट प्रथम-(730-760 ई.)

- नागभट्ट प्रथम ने **भीनमाल को जीतकर अपनी राजधानी** बनाया।
- **भीनमाल शाखा** का **संस्थापक नागभट्ट प्रथम** था।
- नागभट्ट प्रथम गुर्जर प्रतिहार शासक था जिसने अरबों को **पराजित** किया।
- नागभट्ट प्रथम ने ही **जालौर का किला** बनवाया व उज्जैन पर अधिकार किया।

गुर्जर प्रतिहार वंश के शासक
RAS Pre 2018

- नागभट्ट प्रथम (730-760)
- नागभट्ट द्वितीय (795-833)
- महेन्द्रपाल प्रथम (885-910)
- भोज द्वितीय (910-913)
- महिपाल प्रथम (914-943)
- महेन्द्रपाल द्वितीय (945-948)
- देवपाल (948-949)
- त्रिलोचनपाल (1019-1027)
- यशपाल (अंतिम राजा)

- अवन्ती के प्राचीन नगर उज्जैन को राजधानी बनाया **(दशरथ शर्मा के अनुसार -जालौर)**
- नागभट्ट प्रथम को **ग्वालियर प्रशस्ति में मेघनाथ के युद्ध का अवरोधक/**नासक व विशुद्ध क्षत्रीय राजा कहा है।
- नागभट्ट प्रथम का **दरबार नागावलोक का दरबा**र कहलाता है।
- **चीनी यात्री** ह्वेनसांग **ने** भीनमाल को **पिलो भीलों** का नाम दिया।

वत्सराज-(783-795 ई.)

- वत्सराज के शासन काल में कन्नौज को लेकर त्रिराष्ट्र संघर्ष प्रारम्भ हुआ।
- त्रिराष्ट्र संघर्ष में भाग लेने वाले शासक -
- **(अ) गुर्जर प्रतिहार शासक वत्सराज**
- **(ब) पाल वंश (बंगाल) का शासक धर्मपाल**
- **(स) राष्ट्रकूट वंश (द.भारत) का शासक ध्रुव प्रथम**
- त्रिराष्ट्र संघर्ष को प्रारम्भ करने वाला प्रथम शासक। वत्सराज था-वत्सराज ने पाल वंश के शासक धर्मपाल को पराजित किया।
- वत्सराज, ध्रुव प्रथम से पराजित हुआ (प्रथम संघर्ष मे ध्रुव प्रथम विजयी रहा) ।
- पराजित होने के बाद वत्सराज को अपनी राजधानी गवालीपुर/जबालीपुर (जालौर) ले जानी पड़ी।
- विजयी होने के बाद ध्रुव प्रथम ने अपने राष्ट्रकूट वंश के कुल चिन्ह गंगा, यमुना मे स्थापित करवाये।
- सूरत और सन्जन अभिलेख के अनुसार यह युद्ध गंगा व यमुना के दौआब क्षेत्र मे लड़ा गया था।
- **ओसिया के जैन मंदिरो का निर्माण वत्सराज** के शासन काल मे हुआ था।
- ओसिया वर्तमान मे **जोधपुर** मे स्थित है।
- ओसिया को **राजस्थान का भुवनेश्वर** कहा जाता है।
- ओसिया का प्राचीन नाम उपकेश पटन था।
- वत्सराज के शासन काल मे **उधोतन सूरी ने** अपना ग्रंथ **कुवलयमाला** 778 ई. मे जालौर मे लिखा।
- वत्सराज के शासन काल में **जिनसेन सूरी ने हरिवंश पुराण** कि रचना कि थी।
- वत्सराज के शासन काल मे **ओसिया मे हरिहर का मंदिर बनाया** गया जो **पंचायतन शैली** का उदाहरण है।
- गुर्जर प्रतिहारों का **वास्तविक संस्थापक वत्सराज** था।

त्रिपक्षीय संघर्ष -

- दक्षिण में राष्ट्रकूट, पूर्व में पाल एवं उत्तरी भारत में गुर्जर-प्रतिहार ।
- कन्नौज पर आधिपत्य के लिए इन तीनों महाशक्तियों के मध्य हुए संघर्ष को 'त्रिपक्षीय संघर्ष' कहा जाता है।
- इसकी शुरुआत प्रतिहार नरेश वत्सराज ने कन्नौज के शासक इन्द्रायुध को पराजित करके की एवं अन्ततः प्रतिहार इसमें सफल हुए।
- प्रतिहार शासक नागभट्ट द्वितीय ने 816 ई. में कन्नौज के शासक चक्रायुद्ध को हराकर कन्नौज को अपनी राजधानी बनाया एवं 100 वर्ष से चले आ रहे इस संघर्ष को विराम दिया।
- यह संघर्ष लगभग 100 वर्ष तक चला था।

Unleash the topper in you

नागभट्ट द्वितीय - (795-833 ई.)

- नागभट्ट द्वितीय ने 816 ई. में कन्नौज पर अधिकार कर गुर्जर प्रतिहार वंश कि राजधानी बनाया
- इस समय कन्नौज का राजा चक्रायुद्ध था।
- नागभट्ट द्वितीय ने आयुध वंश और पाल वंश को पराजित करने के बाद **परमभट्टारक महाराजाधिराज पंच परमेश्वर की उपाधि धारण** की थी।
- इस उपाधि का उल्लेख बकुला के अभिलेख में है।
- नागभट्ट द्वितीय ने 833 ई. मे जीवित गंगा मे समाधि ली थी।

ओसियाँ

- जोधपुर से लगभग 65 किलोमीटर दूर फलौदी मार्ग पर स्थित ओसियों में श्वेताम्बर जैन मंदिर, ओसवाल समाज की कुलदेवी सच्चिका माता का मंदिर तथा सूर्य मंदिर के अलावा कुल 16 मंदिर है जिनका निर्माण 7वीं से 10वीं शताब्दी के मध्य में प्रतिहारों द्वारा करवाया गया।

भोज प्रथम-(836-885 ई.)

- भोज प्रथम को इतिहास मे **मिहिर भोज** के नाम से जाना जाता है।
- **उपाधियाँ** -
- (अ) **आदिवराह** (इस उपाधि का उल्लेख ग्वालियर अभिलेख में है)।
- (ब) **प्रभास** (इस उपाधि का उल्लेख दौलतपुर के अभिलेख में है।
- भोज प्रथम कि राजनैतिक और सैनिक उपलब्धियों का उल्लेख **कल्हण द्वारा रचित राजतरंगिणी** में है।
- **ग्वालियर प्रशस्ति की रचना** भोज प्रथम के समय की गई।
- भोज प्रथम के समय 851 ई. में अरब यात्री **सुलेमान भारत** आया था जिन्होंने **भोज प्रथम को इस्लाम का सबसे बड़ा शत्रु कहा** था।
- भोज प्रथम ने अपने शासन काल मे चाँदी के सिक्के जारी किये थे।

कवि राजशेखर

- महेन्द्रपाल प्रथम एवं महिपाल के राजदरबारी कवि राजशेखर थे।
- राजशेखर ने 'विवशाल भंजिका में अपने शिष्य महेन्द्र पाल को 'रघुकुलतिलक' कर्पूर मंजरी में महाराष्ट्र चूड़ामणि और बाल महाभारत में रघुग्रामणी (रघुवंशियों में अग्रणी) कहा है।
- राजशेखर ने 'बाल महाभारत' नाटक में महेन्द्रपाल के पुत्र महिपाल को रघुवंश मुक्तामणि (रघुवंश रूपी मोतियों में मणि के समान) तथा आर्यावर्त का महाराजाधिराज कहा है।

महेन्द्रपाल प्रथम-(885-910 ई.)

- इनके दरबारी **कवि राजशेखर** थे जिन्होंने **बाल महाभारत, बाल रामायण, भूवनकोष, काव्यमीमासा और कर्पुरमंजरी नामक ग्रंथ** कि रचना की थी **(RAS PRE 2013)**
- इतिहासकार बी.एन. पाठक ने इन्हें **अंतिम हिंदु भारत का सम्राट** माना है।

महिपाल-(913-944 ई.)

- राजशेखर ने महिपाल को आर्यावृत का **महाराजाधिराज** कहा था।
- महिपाल के समय अरब यात्री **बगदाद निवासी अलमसूदी भारत** आया।
- अलमसूदी ने महिपाल को **बोहरा राजा** कहा है।

राज्यपाल-(990-1019 ई.)

- इसके समय मे 1018-19 ई. में **महमूद गजनवी ने भारत पर आक्रमण** किया था।

यशपाल

- यह गुर्जर प्रतिहार वंश का अंतिम शासक था।
- इलाहबाद के कड़ा नामक स्थान पर 1036 ई. का लेख मिला है जिसमे यशपाल के दान का वर्णन मिला है।
- गुर्जर प्रतिहार वंश के बाद यहा **कनौज के गहड़वाल** वंश का अधिकर हो गया।

परमार राजवंश

- परमार का **शब्दिक अर्थ** -शत्रु को मारने वाला होता है।
- प्रारंभ में परमारों का शासनआबू के आस-पास के क्षेत्रों तक ही सीमित था
- प्रतिहारों की शक्ति के ह्रास के उपरांत परमारों की राजनीतिक शक्ति में वृद्धि हुई।
- **मूल स्थान** - मालवा (मध्यप्रदेश) ।
- **दो मुख्य शाखाएँ**
  - आबू के परमार।
  - मालवा के परमार
- **आबू के परमार**
  - आबू के परमार वंश का **संस्थापक 'धूमराज'** था।
  - पड़ोसी होने के कारण **आबू के परमारों का गुजरात के शासकों से सतत् संघर्ष** चलता रहा।
  - गुजरात के शासक **मूलराज सोलंकी** से पराजित होने के कारण आबू के शासक **धरणीवराह** को राष्ट्रकूट धवल का शरणागत होना पड़ा।
  - लेकिन कुछ समय बाद **धरणीवराह ने आबू पर पुनः अधिकार** कर लिया।
  - उसके पुत्र **महिपाल का 1002 ई.** में आबू पर अधिकार प्रमाणित होता है। इस समय तक परमारों ने गुजरात के सोलंकियों की अधीनता स्वीकार कर ली।
  - महिपाल के **पुत्र धंधुक ने सोलंकियों की अधीनता से मुक्त होने** का प्रयास किया।
  - फलतः आबू पर **सोलंकी शासक भीमदेव** ने आक्रमण किया।
  - धंधुक आबू छोड़कर **धार के शासक भोज के पास चला** गया।
  - भीमदेव ने **विमलशाह को आबू का प्रशासक** नियुक्त किया।
  - विमलशाह ने **भीमदेव व धंधुक के मध्य पुनः मेल** करवा दिया।
  - उसने **1031 ई. में आबू में 'आदिनाथ' के भव्य मंदिर** का भी निर्माण करवाया।
  - धंधुक की विधवा पुत्री ने बसंतगढ़ में सूर्यमंदिर का निर्माण करवाया व सरस्वती बावड़ी का जीर्णोद्धार करवाया।
  - **कृष्णदेव के शासनकाल में 1060 ई. में परमारों और सोलंकियों के संबंध पुनः बिगड़ गये**, लेकिन **नाडौल के चौहान शासक बालाप्रसाद** ने इनमें पुनः मित्रता करवाई।
  - कृष्णदेव के **पौत्र विक्रमदेव ने महामण्डलेश्वर की उपाधि** धारण की
  - विक्रमदेव का प्रपौत्र **धारावर्ष (1163-1219 ई.) आबू के परमारों का शक्तिशाली शासक** था।
  - इसने मो**हम्मद गौरी के विरुद्ध युद्ध में गुजरात की सेना का सेनापतित्व** किया।
  - वह **गुजरात के चार सोलंकी** शासकों कु**मारपाल, अजयपाल, मूलराज व भीमदेव द्वितीय** का समकालीन था।
  - उसने नाडौल के चौहानों से भी अच्छे संबंध रखे।

- अचलेश्वर के गंदाकिनी कुण्ड पर बनी हुई धारावर्ष की मूर्ति और आर-पार छिद्रित तीन भैंसे उसके पराक्रम की कहानी कहते हैं।
- '**कीर्ति कौमुदी**' नामक ग्रंथ का रचयिता **सोमेश्वर धारावर्ष का कवि** था
- उसके पुत्र सोमसिंह के शासनकाल में तेजपाल ने आबू के **देलवाड़ा गाँव में 'लूणवसही' नामक नेमिनाथ का मंदिर अपने** पुत्र लूणवसही व पत्नी अनुपमादेवी के श्रेयार्थ बनवाया।
- इसके पश्चात् प्रतापसिंह और विक्रम सिंह आबू के शासक बने।
- 1311 ई. के लगभग **नाडोल के चौहान शासक राय लूम्बा** ने परमारों की **राजधानी चन्द्रावती** पर अधिकार कर लिया और यहाँ चौहान प्रभुत्व की स्थापना कर दी।
- **जालौर के परमार** -जालौर के परमार **आबू के परमारों के ही वंशज थे**। जालौर से मिले 1087 ई. के शिलालेख में वाकपतिराज, चन्दन, देवराज, अपराजित, विजल धारावर्ष और विसल के नाम मिलते हैं।

- **मालवा के परमार**
  - मालवा के परमारों का मूल उत्पत्ति स्थान भी आबू था।
  - इनकी राजधानी **उज्जैन या धारानगरी** रही, मगर राजस्थान के कई भू-भाग **कोटा राज्य का दक्षिणी भाग, झालावाड़, वागड़ , प्रतापगढ़ का पूर्वी भाग** आदि इनके अधिकार में थे।
  - मालवा के परमारों का शक्तिशाली **शासक मुंज हुआ**।
  - वाक्पतिराज, अमोघवर्ष उत्पलराज पृथ्वीवल्लभ श्रीवल्लभ आदि इसके विरुद्ध थे।
  - मेवाड़ के शासक **शक्तिकुमार के शासनकाल में उसने आहड़ को नष्ट** किया और चित्तौड़ पर अधिकार कर लिया।
  - उसने **चालुक्य शासक तैलप द्वितीय को छः बार परास्त** किया, मगर सातवीं बार उससे पराजित हुआ और मारा गया।
  - राजा मुंज को '**कवि वृष**' भी कहा जाता है।
  - **दरबारी कवि -**
    - **पद्मगुप्त- 'नवसहसांक चरित'** का रचयिता।
    - **हलायुध- 'अभिदानमाला'** का रचयिता।
  - मुंज के बाद **सिंधुराज और भोज प्रसिद्ध परमार** शासक हुए।
  - **भोज परमार**-अपनी विजयों और विद्यानुराग के लिए प्रसिद्ध था।
  - भोज ने **सरस्वती कण्ठाभरण, राजमृगांक विद्वज्जनमण्डल, समरांगण, श्रृंगार मंजरी कथा, कूर्मशतक आदि ग्रंथ लिखे।**
  - चित्तौड़ में उसने '**त्रिभुवन नारायण**' का प्रसिद्ध शिव मंदिर बनवाया, जो मोकल मंदिर के नाम से भी जाना जाता है। (1429 ई. में राणा मोकल द्वारा जीर्णोद्धार के कारण) ।
  - **कुम्भलगढ़ प्रशस्ति के अनुसार** नागदा में **भोजसर का निर्माण**।
  - उसने **सरस्वती कण्ठाभरण नामक पाठशाला** बनवाई।
  - **दरबारी विद्वान**-वल्लभ, मेरूतुंग, वररूचि, सुबन्धु ,अमर, राजशेखर, माघ, धनपाल, मानतुंग आदि विद्वान उसके दरबार में थे।
  - भोज का उत्तराधिकारी **जयसिंह** भी एक योग्य शासक था।
  - वागड़ का राजा **मण्डलीक उसका सामंत** था।
  - 1135 ई. के लगभग **मालवा पर चालुक्य शासक सिद्धराज ने अधिकार** कर लिया और परमारों की शक्ति ह्रासोन्मुख हो गई।
  - तेरहवीं शताब्दी में **अर्जुन वर्मा के समय** मालवा पर पुन: परमारों का आधिपत्य स्थापित हुआ मगर यह अल्पकालीन रहा।
  - खिलजियों के आक्रमण ने मालवा के वैभव को नष्ट कर दिया और **परमार भाग कर अजमेर चले** गए।

- **वागड़ के परमार**
  - वागड़ के परमार मालवा के परमार **कृष्णराज के दूसरे पुत्र डम्बरसिंह के वंशज** थे।
  - इनके अधिकार में **डूँगरपुर-बाँसवाड़ा का** राज्य था जिसे वागड़ कहते थे।
  - **अथुर्णा** इनकी राजधानी थी।
  - धनिक, कंकदेव, सत्यराज, **चामुण्डराज,** विजयराज आदि इस वंश के शासक हुए।
  - चामुण्डराज ने 1079 ई. में अर्थुणा में **मण्डलेश्वर मंदिर का** निर्माण करवाया।
  - 1179 ई. में **गुहिल शासक सामंतसिंह ने** परमारों से वागड़ छीन कर वहाँ **गुहिल वंश का शासन** स्थापित कर दिया।
  - अर्थुणा के ध्वस्त खण्डहर आज भी परमार काल की कला और समृद्धि की कहानी बयां करते हैं।

- **यादव वंश**
  - चन्द्रवंशी यादवों का शासन राजस्थान में **भरतपुर, धौलपुर व करौली** में रहा।
  - करौली के विजयपाल ने 1040 ई. में **विजयमंदिर गढ़ बनवाया**।
  - तहणपाल ने **तवनगढ़ का निर्माण** करवाया।
  - मोहम्मद गौरी के आक्रमण के बाद कुछ यादव बयाना से निकलकर तिजारा व अलवर के आस-पास बस गए।

- **चावड़ा वंश**
  - राजस्थान में **चावड़ों का राज्य भीनमाल** में रहा।
  - 914 ई. के **धरणी वराह के दानपत्र में चावड़ों की उत्पत्ति** भगवान शंकर के चाप (धनुष) से बताई गई।
  - कुछ इतिहासकार इन्हें परमारों की शाखा तो कुछ गुर्जरों की शाखा मानते हैं।
  - कर्नल टॉड ने चावड़ों को **सीथियन** माना है।
  - चीनी यात्री **ह्वेनसांग ने 641** ई. में अपनी भीनमाल यात्रा के दौरान यहाँ के तत्कालीन शासक को क्षत्रिय बताते हुए **भीनमाल को गुर्जर राज्य की राजधानी** बताया।
  - उस समय भीनमाल पर चावड़ों का शासन था।
  - 739 ई. के कलचुरी दानपत्र में भीनमाल पर अरब आक्रमण का उल्लेख है।
  - अरबों के **आक्रमण से कमजोर हुई चावड़ों की शक्ति का फायदा उठाकर प्रतिहारों ने** भीनमाल पर अधिकार कर लिया।

- **यौधेय वंश**
  - 'अष्टाध्यायी' के रचयिता पाणिनी ने यौधेय के जांगल देश (बीकानेर, चूरू व श्रीगंगानगर) में निवास का उल्लेख किया।
  - यौधेय गणतंत्रात्मक शासन प्रणाली से शासित थे।
  - राजस्थान के उत्तर पूर्व और उत्तरी भाग में इनका प्रारंभिक अधिवासन ज्ञात होता है।
  - विजयगढ़ के किले से प्राप्त एक खण्डित लेख में यौधेयों का उल्लेख है।

- **नाग वंश**
  - राजस्थान में नागवंश का शासन अ**हिछत्रपुर (नागौर) के आसपास केन्द्रित** था।
  - 291 ई. के शेरगढ़ (कोटा) शिलालेख में चार नागवंशी शासकों **बिन्दुनाग, पद्मनाम, सर्वनाग व देवदत्त** के नाम मिलते हैं।
  - इस लेख के अनुसार सामंत देवदत्त ने कौशवर्द्धन पर्वत के पूर्व में एक बौद्ध चैत्य का निर्माण करवाया।

2 CHAPTER चौहानों का इतिहास

उत्पत्ति के सिद्धांत

अग्निकुंड का सिद्धांत / अग्निवंशी	• चन्द्र बरदाई की किताब पृथ्वीराज रासो के अनुसार • मुहणोत नैणसी एवं सूर्यमल्ल मिश्रण द्वारा समर्थित
सूर्यवंशी	• पृथ्वीराज विजय, हम्मीर महाकाव्य, हम्मीर रासो, सुर्जन चरित्र, चौहान प्रशस्ति, बेदला शिलालेख, गौरी शंकर हिराचंद ओझा
चंद्रवंशी	• हांसी शिलालेख (हरियाणा), अचलेश्वर मंदिर का लेख
विदेशी मूल	• जेम्स टॉड, डॉ. वी. ए. स्मिथ और विलियम क्रूक
ब्राह्मण	• बिजोलिया शिलालेख, डॉ. दशरथ शर्मा, डॉ. गोपीनाथ शर्मा, कायम खाँ रासो
इन्द्रवंशी मत	• रायपाल का सेवाडी अभिलेख

शाकंभरी एवं अजमेर के चौहान

शाकंभरी एवं अजमेर के चौहान
- वासुदेव चहमान
- गूवक
- सिंहराज
- विग्रहराज द्वितीय
- अजयराज
- विग्रहराज तृतीय
- विग्रहराज चतुर्थ
- अर्णोराज
- पृथ्वीराज द्वितीय
- सोमेश्वर
- पृथ्वीराज तृतीय

- चौहानों का संबंध **मोरिया के वंश** से जोड़ा जाता है और उनका **मूल निवास स्थान चित्तौड़** को माना जाता है।
    - परन्तु **पृथ्वीराज विजय काव्य** में चौहानों के निवास के संबंध में **जांगल देश(बीकानेर,जयपुर और उत्तरी मारवाड़) सपादलक्ष(सांभर), अहिछत्रपुर(नागौर)** आदि स्थानों का उल्लेख किया गया है।
- मुख्य रूप से **सपादलक्ष** को **चौहानों का मूल क्षेत्र** माना जाता है, जिनका **आदि पुरूष वासुदेव** था।
- प्रारंभ में चौहान **गुर्जर प्रतिहारों** के सामंत थे परन्तु **गुवक प्रथम** ने स्वतंत्र शासन स्थापित कर गुर्जरों की अधीनता अस्वीकार की ।
- गुवक प्रथम ने **हर्षनाथ के मंदिर** का निर्माण करवाया था। हर्षनाथ **चौहानों के इष्टदेव** थे।
- इसका समय 551 ई. के आसपास माना जाता है।
- बिजोलिया शिलालेख के अनुसार उसने **सांभर झील का निर्माण** करवाया था।

वासुदेव चहमान

- चौहान राज्य का **संस्थापक** (551 ई.)।
- इन्होंने 551 ई. के आसपास सपादलक्ष में चहमान राज्य की स्थापना की।
    - **राजधानी** – अहिछत्रपुत्र।

क्या आप जानते हैं?
वासुदेव ने सांभर झील का निर्माण करवाया।

गूवक

- पहला **स्वतंत्र चौहान राजा** ।
    - पहले चौहान **प्रतिहारों के सामंत** हुआ करते थे।
- उन्होंने **प्रतिहार राजा नागभट्ट** की अधीनता स्वीकार नहीं की।

क्या आप जानते हैं?
गूवक ने हर्षनाथ मंदिर (चौहानों के इष्टदेव) का निर्माण करवाया।

सिंहराज

- इन्होंने **महाराजाधिराज** की उपाधि धारण की।
- इनका पुत्र **विग्रहराज द्वितीय** था प्रारम्भिक चौहान शासकों में सबसे प्रतापी शासक हुआ ।

विग्रहराज द्वितीय

- वह 965 ई. के आसपास सपादलक्ष का राजा बना।
- इन्होंने चालुक्य **राजा मूलराज प्रथम** को पराजित किया।
- हर्षनाथ के अभिलेख (973 ई.) में विग्रहराज के शासन का उल्लेख है।

विग्रहराज द्वितीय के बाद के शासकों का कालक्रम
दुर्लभ राज → गोविन्दराज तृतीय, वाक्पति द्वितीय → वीर्यराम → चामुण्डराज → दुर्लभराज तृतीय → वीरसिंह → विग्रहाज तृतीय

विग्रहराज तृतीय

- उसे वीसलदेव रासो का नायक 'वीसल/ वीसलदेव' माना जाता है।

- उनके पुत्र पृथ्वीराज प्रथम ने 1105 ई. में चालुक्यों को पुष्कर के ब्राह्मणों को लूटने से बचाया था और **'परमभट्टारक महाराजाधिराज परमेश्वर'** की **उपाधि** धारण की।

अजयराज (1105-1133)

- पृथ्वीराज प्रथम के पुत्र।
- **अजयराज का समय** - चौहान साम्राज्य निर्माण का समय माना जाता है।
- 1113 ई. के आसपास अपने नाम से **अजयमेरू (अजमेर) की स्थापना** की।
- अजयमेरु में एक गढ़ का निर्माण करवाया जिसे **गढ़बीठली/ तारागढ़** कहा जाता है।
- **शैव** भक्त ।
  - परन्तु जैन और **वैष्णव धर्मावलम्बियों** को भी संरक्षण प्रदान किया।
  - नगर में अनेक **जैन मंदिर** बनवाने की अनुज्ञा प्रसारित की और **पार्श्वनाथ के मंदिर** के निर्माणार्थ **स्वर्ण कलश** भेंट किया।
- उसका समय आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न था – **चाँदी (श्री अजयदेव के नाम से) और ताँबे के सिक्कों** से पता चलता है।
  - सिक्कों पर उसकी **रानी सोमलवती** का नाम भी मिलता है।

क्या आप जानते हैं?
- अर्णोराज ने महाराजाधिराज परमेश्वर परमभट्टारक श्रीमान की उपाधि धारण की।
- उन्होंने इंदु नदी रोककर अजमेर में आनासागर झील का निर्माण करवाया।

अर्णोराज / आनाजी चौहान (1133-55)

- अजयराज का पुत्र।
- साम्राज्य का विस्तार **सिन्धु और सरस्वती नदी के प्रदेशों तक** किया।
- अपने राजकाल के आरंभ में उसने गजनवी के आक्रमण को खदेड़ दिया।
- मालवा के नर वर्मन को पराजित करने में सफल रहा।
  - पंजाब के **पूर्वीभाग** और **संयुक्त प्रांत** के पश्चिमी भाग को अपने साम्राज्य का हिस्सा बनाया।
- मालवा शासक जयसिंह ने अपनी **पुत्री कान्चनदेवी का विवाह अर्णोराज** से किया।
- **चौहान व चालुक्य संघर्ष**
  - **अर्णोराज** गद्दी पर बैठा उस काल तक चालुक्य बड़े शक्तिशाली हो गये थे।
  - **जयसिंह सिद्धराज और कुमारपाल** बड़े महत्वाकांक्षी थे अपने पैतृक राज्य की सीमाओं को परिवर्द्धित करना चाहते थे।
  - इन दोनों शासकों की महत्वाभिलाषा के कारण संघर्ष उग्र हो गया था।
  - **अर्णोराज** अपना राज्य विस्तार मालवा की ओर करना चाहता था तो जयसिंह राजस्थान की ओर बढ़ना चाहता था।
  - अन्त में जयसिंह ने अर्णोराज की कुछ बातें मानकर उसे राजी कर लिया और दोनों का वैमनस्य वैवाहिक सम्बन्ध से कुछ समय के लिए समाप्त हो गया।
  - जयसिंह ने अपनी पुत्री कान्चनदेवी का विवाह **अर्णोराज** से कर दिया।
  - परन्तु चाहमान चालुक्य संघर्ष, **1142 ई. में कुमारपाल के शासक** होने पर फिर छिड गया।
  - हेमचन्द्र ने अपने ग्रन्थ **'द्वयाश्रय महाकाव्य'** में इस युद्ध को आरम्भ करने का दोषी **अर्णोराज** को ठहराया है, यह बताते हुए कि उसने कुमारपाल के विरुद्ध कुछ राजाओं को मिलाकर गुजरात पर धावा बोल दिया था।
  - मेरुतुंग ने अपने **प्रबन्ध चिन्तामणि** में युद्ध के कारणों पर प्रकाश डालते हुए यह बताया है कि अर्णोराज आक्रामक था और उसने चाहड से मिलकर गुजरात के सामन्तों में फूट डालकर कुमारपाल की स्थिति को गम्भीर बना दिया था।
  - 1142 ई. में कुमारपाल के समय चरमोत्कर्ष पर पहुँच गया।
    - **कुमारपाल** ने आबू के निकट उसे परास्त कर दिया।
    - **अर्णोराज** को अपनी बहन, हाथी, घोड़ें आदि उपहार में देकर उसे विदा करना पड़ा (प्रबंध चिंतामणि और प्रबंध कोष के अनुसार)।
- **शैव धर्म** का अनुयाई ।
- पुष्कर में **वराह-मंदिर का निर्माण** करवाया।
- उसके समय के विद्वान - **देव बोध और धर्म घोष** ।
- उसके **पुत्र जगदेव** ने उसकी हत्या कर दी जिसके बाद वो अल्पकाल के लिए सत्ताधारी रहा।

विग्रहराज चतुर्थ/ बीसलदेव चौहान (सपादलक्ष का स्वर्णकाल) (1158-63)

- साम्राज्य का विस्तार **शिवालिक पहाड़ी** (हिमालय) तक कर लिया था।
  - **पंजाब में मुसलमानों को तथा दिल्ली में तोमरों** को पराजित किया।
    - उसके बाद **दिल्ली-शिवालिक स्तंभ** लगवाया।
- चालुक्य नरेश कुमारपाल से पाली, जालोर और नागौर प्रदेश छीनकर अपने राज्य में मिला लिये थे।
- विद्वान उसे **कविबांधव** के नाम से पुकारते थे।
  - **पृथ्वीराज विजय के लेखक** के अनुसार उसके बाद यह उपाधि धारण करने वाला कोई नहीं रहा।
- स्वयं **हरकेलि नाटक** (संस्कृत)का रचियता था।
- बीसलपुर की स्थापना (टोंक में बीसलपुर सागर बाँध) ।

- इनके काल में दिल्ली में **शिवालिक स्तंभ अभिलेख** का उत्कीर्ण कराया गया। (**RAS PRE 2015**) ।
- विग्रहराज चतुर्थ द्वारा **'जवालिपुर' का नाम बदलकर 'ज्वालापुर'**कर दिया गया।
- अजमेर में एक **संस्कृत पाठशाला** बनवाई।
  - बाद में 1198 में **कुतुबुद्दीन ऐबक** ने तुड़वाकर **ढाई दिन का झोपड़ा नामक मस्जिद** का निर्माण करवाया।
- शैव मत को मानते हुए भी वह **धार्मिक दृष्टि से सहिष्णु** था।
  - जैन विहार बनवाये और **धर्मघोष सूरी** के आदेश से एकादशी के दिन के लिये **पशुवध पर रोक** लगा दी।
- **दरबारी विद्वान**-
  - **सोमदेव** - ललित विग्रहराज।
    - इसके अनुसार विग्रहराज ने **गज़नी के राजा खुसरो शाह** को हराया।
  - **जयानक भट्ट**
    - कविबान्धव की उपाधि प्रदान की।
- **उपाधि**-
  - बीसलदेव।
  - कविबान्धव/कटीबंधू।

बीसलदेव रासो
- **नरपति नाल्ह** द्वारा लिखित।
- **विग्रहराज चतुर्थ** और उनकी **रानी राजमती** की **प्रेम कहानी**।
- गौड़वाड़ी भाषा में लिखित।

पृथ्वीराज द्वितीय

- विग्रहराज चतुर्थ के पश्चात् **अपरगांग्य शासक** बना और उसके बाद **पृथ्वीराज द्वितीय** ने बागडोर संभाली।
- शिव उपासक।
- बिजोलिया के **पार्श्वनाथ मंदिर** के लिये **मोरझरी गाँव** को अनुदान दिया।

सोमेश्वर

- **पृथ्वीराज के कोई संतान नहीं** थी, इसलिये, उसकी मृत्यु के पश्चात् उसका **चाचा सोमेश्वर** (अर्णोराज का पुत्र) **शाकम्भरी राज्य का शासक** बना।
- उसका विवाह **कलचुरी की राजकुमारी** कर्पूरदेवी से हुआ था, जिससे **पृथ्वीराज तृतीय और हरिराज** पुत्र पैदा हुआ।
- इनके समय का 'बिजौलिया अभिलेख' मिला है जिसकी तिथि 1170 ई. की है।
- उसने अपने पिता की **मूर्तिकला** को एक नया आयाम दिया।
- शैव होते हुए भी वह **धार्मिक दृष्टि से सहिष्णु** था।
  - **जैन धर्म** के प्रचार-प्रसार के लिये भी कार्य किया।
- उसका पुत्र **पृथ्वीराज तृतीय 1717 ई. में चौहानों का नेता** बना।

क्या आप जानते हैं?
- सोमेश्वर ने 'प्रतापक्डेश्वर' की उपाधि धारण की।

पृथ्वीराज तृतीय (1177-1192)

- अजमेर के चौहान वंश का **अंतिम प्रतापी शासक**।
- **'दलपुन्गल** (विश्वविजेता) व **रायपिथौरा'** के नाम से जाना जाता है।
- **जन्म** - अहिलवाड़ा/अंहिलपाटन (गुजरात) में 1166 ई. में।
- **पिता** - सोमेश्वर।
- **माता** - कर्पूरीदेवी। (दिल्ली के शाशक अनंगपाल तौमर की पुत्री)
- **मुख्यमंत्री** - कदंबवास (जिसे केम्बवास या केमास भी कहते हैं।)
- **सेनापति** - भुवनमल्ल
- अजमेर के चौहान वंश का अंतिम प्रतापी शासक।
- सूफ़ी संत **ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती पृथ्वीराज तृतीय के शासन काल में राजस्थान में आये (RAS pre 2003)**

आल्हा और उदल
- परमार्दिदेव के वीर सेनानायक जो रूठकर पड़ौसी राज्य चले गए।
- 1182 में माहोबा के युद्ध के दौरान परमाददेव के बुलाने पर दोनों सेनानायक वापस आ गए और लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुए।

- अपने चचेरे भाई नागार्जुन के विद्रोह का दमन और सतलज प्रदेश में भंडानक जाती को खदेड़ता है।

पृथ्वीराज द्वारा लडे गए प्रमुख युद्ध
- महोबा (मध्य प्रदेश) / तुमुल का युद्ध
  - पृथ्वीराज और परमाददेव चंदेल
  - पृथ्वीराज विजयी
- नागौर का युद्ध,
  - पृथ्वीराज और गुजरात के भीम द्वितीय चालुक्य के मध्य
- पृथ्वीराज जयचंद विवाद
  - पृथ्वीराज ने जयचंद की पुत्री संयोगिता से जयचंद की मर्ज़ी के खिलाफ़ भाग कर विवाह कर लिया।
- तराइन का प्रथम युद्ध
  - पृथ्वीराज और मुहम्मद गौरी के मध्य
  - पृथ्वीराज विजयी
- तराइन का द्वितीय युद्ध
  - पृथ्वीराज और गौरी के मध्य
  - गौरी विजयी

पृथ्वीराज द्वारा लड़े गए प्रमुख युद्ध

1. **महोबा(मध्य प्रदेश)/ तुमुल का युद्ध - 1182 ई.**
   - **पृथ्वीराज** और **परमार्दीदेव चंदेल** के मध्य
   - **पृथ्वीराज विजयी** हुआ ।

- दिल्ली लौटते समय अपने सामंत **पुंजराय को महोबा** का अधिकारी नियुक्त किया गया।

2. नागौर का युद्ध - 1184 ई.

- पृथ्वीराज और गुजरात के भीम द्वितीय चालुक्य के मध्य।
- कारण-
    - एक कारण था की **पृथ्वीराज** के चाचा **कान्हड़देव** ने **भीमदेव द्वितीय** के 7 **चचेरे भाइयों** को **मार** दिया था इसलिए भीमदेव ने **नागौर** पर **अधिकार** कर लिया और **सोमेश्वर** को **मार** डाला।
    - **पृथ्वीराज रासो** के अनुसार दोनों **आबू की राजकुमारी इच्छनी देवी** से शादी करना चाहते थे और **पृथ्वीराज** ने उससे **विवाह** कर लिया।
- 1187 के आसपास **जगदेव प्रतिहार** ने मध्यस्तता कर दोनों के बीच एक संधि करवा दी।

3. चौहान - गहड़वाल विवाद/ पृथ्वीराज - जयचंद विवाद

- **कारण**-
    - दिल्ली को लेकर **विग्रहराज चतुर्थ** के समय से ही **चौहानों** और **गहड़वालों** के मध्य **मतभेद** था और **पृथ्वीराज** के समय यह विवाद बढ़ गया ।
    - पृथ्वीराज ने **जयचंद की पुत्री संयोगिता** से जयचंद की मर्ज़ी के खिलाफ़ भाग कर विवाह कर लिया।

तराइन के द्वितीय युद्ध के परिणाम

- इसी युद्ध के परिणामस्वरुप भारत में मुस्लिम राज्य की स्थापना हुई और हिन्दू सत्ता का अंत हुआ।

4. तराइन का प्रथम युद्ध (1191 ईस्वी)

- पृथ्वीराज और मुहम्मद गौरी के मध्य।
- **कारण**-
    - गौरी ने **तबरहिन्द (भटिंडा) पर कब्ज़ा** कर लिया।
- **पृथ्वीराज विजयी**
- सेनापति - चामुंड राय।
- दिल्ली के गवर्नर '**गोविन्द राज तं वर**' के एक वार से गौरी घायल हो जाता है

दरबारी विद्वान

- चन्द्रबरदाई/ पृथ्वी भट्ट - पृथ्वीराज रासो
- जयानक - पृथ्वी राज विजय जनार्दन
- वागीश्वर
- विद्यापति गौड़
- विश्वरूप

5. तराइन का द्वितीय युद्ध (1192 ईस्वी)

- **पृथ्वीराज और गौरी** के मध्य ।
- **गौरी विजयी**
- पृथ्वीराज को **सिरसा** (हरियाणा) नामक स्थान से पकड़ लिया गया और उसे मार दिया गया।
- **हार के कारण**-
    - पृथ्वीराज के पड़ोसी राज्यों के साथ **विवाद** - किसी ने उसकी **मदद नहीं** की।
    - **तराइन के प्रथम युद्ध** के बाद **पृथ्वीराज ने गौरी को** दुसरे युद्ध की तैयारी के लिए **पर्याप्त समय** दे दिया।
    - पृथ्वीराज के ज़्यादातर **लायक सेनापति** दुसरे युद्धों में लिप्त थे ।
        - **चामुंड राय** भी इस युद्ध में भाग नही ले पाया ।
    - गौरी एक लायक सेनापति था और उसने **कूटनीति से पृथ्वीराज को पराजित** किया।
    - तुर्की सेना ने **घोड़ो का इस्तेमाल** किया जबकि पृथ्वीराज की सेना ने **हाथियों का**।
    - तुर्की सेना ने **हलके हथियारों का भी इस्तेमाल** किया।
    - गौरी की सेना सुव्यवस्थित थी और पृथ्वीराज की सेना इसके विपरीत बिल्कुल अव्यवस्थित थी।
    - सामंती सेना की वजह से **पृथ्वीराज** की सेना में **नेतृत्व** का **अभाव** था।
    - **नोट**- तराईन के प्रथम (1191)में तुर्कों की शक्ति को पूरी तरह से नष्ट नहीं करना उसकी सबसे बड़ी भूल थी जिससे भारत में तुर्की शाशन की स्थापना हुई !
    - तराइन के दोनों युद्धों का विस्तृत विवरण **कवि चन्द्रवरदाई के पृथ्वीराज रासो** तथा हसन निजामी के '**ताजुल मासिर**' एवं सिराज के '**तबकात-ए-नासिरी**'में मिलता है।

चौहान तुर्क विवाद (1178 से 1190 ई.)

- पृथ्वीराज रासो में राठौड़ों और तुर्कों की 21 बार मुठभेड़ होना लिखा है, जिसमें चौहानों को विजेता बताया है।
- हम्मीर महाकाव्य ने पृथ्वीराज का गोरी को सात बार परास्त करना लिखा है।
- पृथ्वीराज प्रबन्ध आठ बार हिन्दू-मुस्लिम संघर्ष का जिक्र करता है।
    - प्रबन्ध कोष का लेख बीस बार गोरी का पृथ्वीराज द्वारा कैद कर मुक्त करना बताता है।
    - सुर्जन चरित्र में 21 बार

- प्रबन्ध चिन्तामणि में 23 बार गोरी का हारना अंकित है।
- केवल दो बार चौहान-तुर्क संघर्ष का वर्णन इन तवारीखों में मिलता है, क्योंकि ये दोनों संघर्ष ही एक प्रकार से निर्णायक रूप में लिये गये थे और उन दोनों का निकटतम समय था। दोनों सैनिक सम्बन्ध पहले की छेड़छाड़ के अन्तिम स्वरूप मात्र थे।

संस्कृतिक उपलब्धियाँ

- एक पृथक **कला व संस्कृति विभाग** बनाया।
  - **मंत्री** - पद्मनाभ।
- दिल्ली के निकट **पिथौरागढ़** भी बनाया।

दिग्विजय नीति का समालोचनात्मक वर्णन -

- एक दृष्टि से पृथ्वीराज की दिग्विजय योजना समयोचित थी।
- अपने निजी शत्रुओं के दमन के पश्चात् राजनीतिक प्रभुत्व की स्थापना के लिए ऐसी नीति का अपनाया जाना न्यायोचित दिखाई देता है। इसके साथ-साथ वृहत् चौहान राज्य के आतंक को बनाये रखने के लिए भी दिग्विजय की योजना बनाना आवश्यक था।
- इसी तरह अपने सैनिकों और सामन्तों को सतत् रूप से अभियानों में लगाये रखने से पृथ्वीराज ने अपने युग में शक्ति सन्तुलन की स्थिति को ठीक बनाये रखा।
- पृथ्वीराज की कीर्ति बढ़ाने में इन युद्धों की भूमिका है।

उपाधियाँ:

- राय पिथोरा
- दल पुन्गल (विश्व विजेता)

आलोचना पक्ष

- परन्तु जब हम दिग्विजय नीति के व्यावहारिक पहलुओं को देखते हैं तो ऐसा दिखाई देता है कि वह अन्ततोगत्वा चौहान राज्य के लिए हितकर सिद्ध नहीं हुई।
- चन्देल की विजय से इसका स्थायी प्रभाव यह हुआ कि पृथ्वीराज ने अपने शत्रुओं की संख्या में चन्देलों को सम्मिलित कर लिया।
- इससे गहड़वालों और चन्देलों का भी गठबन्धन हो गया ।
- इसके द्वारा उसको सैनिक व्यय बढ़ाने के लिए बाध्य होना पड़ा और विजय से होने वाले लाभों से उसे वंचित होना पड़ा।
- गुजरात अभियान से भी पृथ्वीराज स्थायी रूप से अपने राज्य में कोई भूमि सम्मिलित न कर सका। इस अभियान से पीढ़ियों पुराने वैमनस्य में गुत्थियाँ पड़ गयी।
- आगे से होने वाले गौरी के आक्रमण के समय चालुक्य शक्ति तटस्थ बनी रही।

संभावी परिणाम

- सम्भवतः इनकी संयुक्त शक्ति भारतीय भविष्य को नया रूप दे सकती थी ।
- जहाँ बुन्देलखण्ड और गुजरात चौहानों के शत्रु थे ऐसी दशा में गहड़वालों का वैमनस्य पृथ्वीराज के लिए और अधिक महँगा पड़ा।
- गहड़वाल चन्देलों के अधिक निकट आ गये जिससे इनका संगठन चौहान शक्ति के लिए भय का कारण बन गया।
- कई मोर्चों पर तथा सीमाओं पर सैन्य बल घट गया। यह समूचा बल विदेशी शत्रु के विरुद्ध आसानी से काम में लाया जा सकता था ।
- यदि समूची चौहान - चालुक्य- गहड़वाल शक्ति मिलकर काम करती तो पृथ्वीराज को एक नेतृत्व भी प्राप्त हो जाता और विदेशी शत्रु भी ढकेले जाते ।
- अतएव यह दिग्विजय योजना जो पड़ौसी राज्यों के विरुद्ध अपनायी गयी थी, दूरदर्शिता से शून्य थी।
- इस नीति ने हर प्रकार से पृथ्वीराज की सैनिक स्थिति को निर्बल और गम्भीर बना दिया। वह यह सोच न सका कि निकटवर्ती राज्यों से भी अधिक भयानक शत्रु उत्तर-पश्चिम से आने वाले आक्रमणकारी हैं।
- यदि इस सम्बन्ध में दिग्विजय नीति का प्रयोग कुछ सूझबूझ के साथ किया जाता तो चौहान राज्य की परिस्थिति कुछ दूसरी होती और आगे से आने वाले तूफान से भारतवर्ष बच सकता था ।

रणथम्भौर के चौहान

गोविन्द राज

- पृथ्वीराज चौहान तृतीय का पुत्र, **हम्मीर हठी** के नाम से प्रसिद्ध।
- 1194 ई. में रणथम्भौर **का स्वतंत्र चौहान राज्य** स्थापित किया।
- इसके उत्तराधिकारी वाल्हन, प्रहलादन, वीरनारायण थे।
- वीरनारायण को इल्तुतमिश के आक्रमण का सामना करना पड़ा।
- वीरनारायण का उत्तराधिकारी 'वाग्भट्ट' हुआ इसके समय बलबन ने रणथम्भौर पर आक्रमण किया।

हम्मीर (1282-1301)

- वह **जैत्रसिंह (जयसिम्भा) चौहान का तीसरा पुत्र** था।
- 1282 ई. में हम्मीर देव का **राज्यारोहण उत्सव** मनाया गया।
- हम्मीर देव रणथम्भौर के चौहान शासकों में **अंतिम परंतु सर्वाधिक महत्वपूर्ण शासक** था।

देवल दे

- हम्मीर की बेटी
- पद्मा तालाब में डूब कर जान दे दी

- नयनचंद्र सूरी कृत **'हम्मीर महाकाव्य व सुर्जन चरित्र',** जोधराज कृत **'हम्मीर रासो'** तथा चंद्रशेखर कृत **'हम्मीर हठ'** नामक आदि ग्रंथों से उनकी जानकारी मिलती है।
- हम्मीर देव के सिंहासन पर बैठते ही **साम्राज्य का विस्तार** करने के लिए **दिग्विजय की नीति** अपनाते हुए अपना अभियान शुरू किया।

हम्मीर ने भीमरस (उत्तर प्रदेश)के राजा अर्जुन को हराया ।

  - 17वें तथा अंतिम युद्ध में वह दिल्ली के सुल्तान **अलाउद्दीन खिलजी की सेना से लड़ते हुए वीरगति** को प्राप्त हुआ।

सांस्कृतिक उपलब्धियाँ

- कोटियज्ञ करवाया।
  - **पंडित** : विश्वरूप।
- **शृंगार हार** नामक किताब लिखी।
- अपने पिता **जैत्र सिंह** की याद में, **32 खंभों की छतरी** का निर्माण करवाया।

हम्मीर देव और दिल्ली सल्तनत

हम्मीर बनाम जलालुद्दीन खिलजी

- मार्च, 1290 ई. में **जलालुद्दीन खिलजी** दिल्ली से रणथम्भौर की ओर आक्रमण के लिए रवाना हुआ।
  - जलालुद्दीन ने **चाइन/झाईन** (जिसे वर्तमान में छाण कहते हैं) **पर अधिकार** कर लिया।
  - जलालुद्दीन फिरोज खिलजी ने झाईन से **रणथम्भौर** की ओर बढ़कर **दुर्ग की घेराबंदी** कर दी।
  - काफी दिनों के प्रयास के बाद **सुल्तान** को सफलता नहीं मिली तो घेरा उठाने का निर्णय लिया लेकिन उसके सलाहकार **मलिक अहमद चाप** ने घेरा नहीं उठाने की सलाह दी लेकिन सुल्तान ने अपनी सेना को यह कहा कि- **'ऐसे दस किलों को तो मैं मुसलमान के एक बाल के बराबर भी महत्त्व नहीं देता।'** और यह कहकर वहाँ से घेरा हटा लिया।
  - **झाईन -** रणथम्भौर की कुंजी
  - हम्मीर का सेनापति " **गुरुदास सैनी** " मारा गया
- 1296 ई. को **जलालुद्दीन के भतीजे व दामाद अलाउद्दीन खिलजी** ने जलालुद्दीन की हत्या कर दिल्ली का सुल्तान बन गया।

हम्मीर बनाम अलाउद्दीन खिलजी (1301)

- **कारण-**
  - गुजरात आक्रमण के समय बगावत होने पर खिलजी के विद्रोही मुहम्मद शाह और कहब्रू को शरण देना।
  - हम्मीर द्वारा राज कर बंद कर देना ।
  - रणथम्भौर दुर्ग का सामरिक महत्व।
  - खिलजी की सम्राज्यवादी निति।
- अलाउद्दीन खिलजी ने **1299 ई. के अंत में** शाही सेना को **रणथम्भौर दुर्ग पर आक्रमण** करने के लिए भेजा।
  - **सेनापति:**
    - नुसरत खान - रणथम्भौर में लड़ते हुए मारा गया।
    - उलुग खान।
    - अलप खान।
- **हम्मीर के सेनापति** -
  - धरम सिंह।
  - भीम सिंह - लड़ते हुए मारा गया।
- बाद में **रतिपाल व रणमल** ने **हम्मीर को धोखा** दिया और खिलजी के साथ मिल गए।
- **1301 ई.** में अलाउद्दीन के आक्रमण करने से पूर्व राजपूत स्त्रियों ने हम्मीर की **रानी रंगदेवी व उसकी पुत्री पदम्ला के नेतृत्व में जल जौहर** किया।
  - इसके बाद राजपूत सैनिकों ने **केसरिया वस्त्र धारण कर** दुर्ग के फाटक खोल दिए।
  - दोनों पक्षों में जमकर युद्ध हुआ जिसमें हम्मीर देव वीरतापूर्वक लड़ता हुआ मारा गया।
  - **रणथम्भौर का यह साका राजस्थान के इतिहास का पहला साका** कहलाता है।
  - खिलजी द्वारा रणथम्भौर को जीतकर सेनापति **उलगु खाँ** को सोंप दिया।

- धार के राजा 'भोज परमार' को भी हराया तथा चित्तौड़ के समर सिंह को भी हराया ।
- हम्मीर देव ने अपने जीवनकाल में **17 युद्ध लड़े जिनमें से 16 युद्धों में विजय** रहा ।

- **दरबारी विद्वान** -
  - बीजादित्य।
  - राघव देव - हम्मीर के गुरु।

हम्मीर का मूल्यांकन-

- हम्मीर के साथ रणथम्भौर के चौहानों का राज्य समाप्त हो गया और दुर्ग दिल्ली सल्तनत का भाग बन गया।
- यहाँ के चौहान शासक धर्म और साहित्य के अभिवृद्धि में रुचि लेते थे। स्वयं हम्मीर ब्राह्मणों का पोषक और धर्म सहिष्णु था। उसमें विद्वानों के प्रति बड़ी श्रद्धा थी ।
- **विजयादित्य** उसके समय का राज्य सम्मानित कवि था और **राघवदेव उसका गुरु** था।
- उसमें असीम उदारता और विचारों की दृढ़ता थी। उसके बारे में प्रसिद्धहै कि "**तिरिया- तेल हम्मीर हठ चढ़े न दूजी बार।**"
- इस कथन के अनुरूप उसने शरणार्थी की रक्षा के लिए राज्य और जीवन का त्यागकर इस कथन का अन्त तक आचरण किया।
- जहाँ हम हम्मीर के गुणों की प्रशंसा करते हैं वहाँ हम उसकी **भूलों की भी उपेक्षा नहीं कर सकते।**
- उसने अपने पड़ोसी राज्यों से युद्ध छेड़कर और उनके **धन का अपहरण कर** अपने शत्रुओं की संख्या बढ़ा ली।
- उसने अपने बड़े शत्रु अलाउद्दीन के विरुद्ध संगठन करने की कोई चेष्टा न की।
- अपनी प्रजा को भी उसने कर-वृद्धि के द्वारा असन्तुष्ट कर दिया जिससे उसकी लोकप्रियता कम हो गयी।
- इन कमियों के होते हुए भी आज हम्मीर को लोग श्रद्धा की दृष्टि से देखते हैं।
- **क्योंकि** उसने पैतृक राज्य के लिए व शरणागत की रक्षा के लिए तुर्कों से कई बार टक्कर ली और उसके फलस्वरूप वह वीरोचित गति को प्राप्त हुआ।
- डॉ. दशरथ शर्मा लिखते हैं कि "यदि उसमें कोई दोष भी थे तो वे उसके वीरोचित युद्ध, वंश की प्रतिष्ठा की रक्षा तथा मंगोल शरणागतों की रक्षा के सामने नगण्य हो जाते हैं।

इस घटना में दो विषय बड़े रोचक हैं।

- हम्मीर ने **अपने सर्वतोन्मुखी नाश के मुकाबले अपने शरणागतों की रक्षा को सबसे अधिक मूल्यवान** समझा।
- दूसरी बड़ी बात यह है कि जिन शरणार्थियों के लिए हम्मीर ने अपना सर्वनाश का आह्वान किया था उन्होंने भी अपने प्राणों को अपने स्वामी के लिए न्यौछावर कर दिया।

हम्मीर के जानकारी के स्रोत
• नयन चन्द्रसूरी – हम्मीर महाकाव्य
• जोधराज एवं सारंगधर - हम्मीर रासो
• चन्द्र शेखर - हम्मीर हठ
• जयसिंह सूरी - हम्मीर मद मर्दन
• हम्मीरायण - व्यास भडाउ
• रजा हम्मीरदेरा कविता - भट्ट खेमा

- शरणार्थी की रक्षा की घटना और उनके प्रति **अपनायी गयी नीति में दूरदर्शिता का अभाव** था।
- इसकी पुष्टि में यह भी कहा जा सकता है कि यदि हम्मीर ने इन मंगोलों को, जो खलजी खीमे के बागी थे, शरण न दी होती तो अलाउद्दीन का वह कोपभाजन न बनता और रणथम्भौर के चौहानों के दुर्दिन न आते ।
- **सम्भवतः** इस वंश का जीवन कुछ समय आगे बढ़ सकता था। परन्तु हम इस बात को नहीं भूल सकते कि अलाउद्दीन द्वारा रणथम्भौर के आक्रमण में मंगोलों को शरण देना मुख्य कारण नहीं था। यह तो एक बहाना था जिसको लेकर खलजी आक्रमण की न्यायसंगतता बतायी गयी थी।
- वास्तव में, दक्षिण प्रदेशों पर खलजियों का राजनीतिक प्रभाव बनाये रखने के लिए राजस्थान के दुर्गों पर अधिकार करना आवश्यक था। यदि मंगोल अलाउद्दीन के खीमे को छोड़ हम्मीर की शरण में न आये होते तो भी रणथम्भौर के आक्रमण को टाला नहीं जा सकता था ।
- हम्मीर का उन्हें शरण देना कोई राजनीतिक भूल न थी, वरन् एक कर्तव्य परायणता थी ।
- हम्मीर की मृत्यु के बाद चौहानों की रणथम्भौर की शाखा समाप्त हो गयी।
- राजस्थान के इतिहास में हम्मीर का सम्मान **एक वीर योद्धा के रूप में ही नहीं है वरन् एक उदार शासक** के रूप में है ।
- वह शिव, विष्णु और महावीर के प्रति समान भाव से श्रद्धा रखता था। उसने कोटियज्ञ के सम्पादन के द्वारा अपनी धर्मनिष्ठा का परिचय दिया जिससे उसे एक स्थायी प्रतिष्ठा प्राप्त हुई ।

नाडोल के चौहान
1. लक्ष्मण चौहान
2. अहिल
3. केल्हण
4. अल्हण

नाडोल के चौहान (960 -1205)

लक्ष्मण चौहान (960)

- वाक्पति राजा का पुत्र **लक्ष्मण नाडोल चौहानों का प्रवर्तक** था।
- 960 ई. में जब **चावडा सामन्तसिंह** की मृत्यु हो गयी तो उसने अपने आपको नाडोल का स्वामी बना लिया।
- वह एक वीर शासक था जिसने नाडोल राज्य की सीमा जोधपुर तक बढ़ा ली थी।
- **आशापूर्ण माता** के मंदिर का निर्माण कराया।
- 983 ई. के लगभग उसकी मृत्यु हो गयी।
- उसके उत्तराधिकारियों में **शोभित, बलराज, महेन्द्र, अहिल, बालाप्रसाद पृथ्वीपाल** आदि शासक हुए।

अहिल

- जिनमें **अहिल** का नाम विशेष उल्लेखनीय है।
- इसने गुजरात के **भीमदेव की सेनाओं** को परास्त किया तथा अपने हाथ से **मालवा के भोज के सेनाध्यक्ष सधा** का सर धड़ से अलग किया।
- 1025 ई. में जब महमूद गजनी, नाडोल और अन्हिलवाड़ा के मार्ग से सोमनाथ के अभियान के लिए जा रहा था तो उसने उसकी सेना से टक्कर ली थी।
- इसी प्रकार इसी वंश के **पृथ्वीपाल ने गुजरात के कर्ण** को परास्त किया था।
- परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि नाडोल के चौहान शासकों की तीसरी या चौथी पीढ़ी के शासक **असराज, अल्हण केल्हण**

आदि निर्बल हो गये थे और उन्हें गुजरात के सोलंकियों की सामन्ती स्वीकार करनी पड़ी थी।

केल्हण

- मूलराज द्वितीय के सामन्त के रूप में मुहम्मद गौरी के विरुद्ध कायद्रान के 1178 ई. के युद्ध में लड़ा था। फिर 1205 ई. के लगभग नाडोल शाखा के चौहान जालोर के चौहानों में विलीन हो गये।

अल्हण

- उनके पुत्र कीर्तिपाल ने **जालोर में एक स्वतंत्र राज्य** बनाया।

जालोर के चौहान/ सोनगरा चौहान

- ऋषि **जाबाली** की तपोभूमि होने के कारण इसे **जबालिपुर** कहते थे जो कालांतर में जालोर हो गया।
- जल वृक्षों की अधिकता के कारण जालोर नाम दिया गया।
- चौहानों की इस शाखा के **संस्थापक लक्ष्मण चौहान** थे, जो **शाकंभरी नरेश वाक्पति के पुत्र** थे।
- नाडोल के चौहान का 1205 में **जालोर के चौहानों की शाखा** में विलय हो गया।
- जालोर का किला सोनार गिरी(सुवर्ण गिरी)नामक पहाड़ी पर होने कारण यहाँ के शासक सोनगरा कहलाये।

जालौर के चौहान/ सोनगरा चौहान

- कीर्तिपाल
- उदयसिंह
- चाचिगदेव
- सामंत सिंह
- कान्हड़देव

कीर्तिपाल

- जालोर के चौहान वंश की स्थापना **1181 ई. में कीर्तिपाल** द्वारा जालोर को **परमारों** से छिनकर की गयी।
- मुहणोंत नैणसी ने कीर्तिपाल को ' **कितु एक महान राजा** ' कहा ।
- बिजौलिया प्रशस्ति में जालोर को 'जाबालिपुर' कहा गया है।
- जालोर के किले को **सुवर्णगिरी, सोनगढ़ और कांचन गिरी** भी कहा जाता है।
- इसी से जालोर के चौहान **सोनगरा चौहान** कहलाते हैं।
- कीर्तिपाल का उत्तराधिकारी **समरसिंह** था। उसने जालोर में सु**दृढ़ प्राचीर, कोषागार और शस्त्रागार** का निर्माण करवाया।
- समरसिंह ने गुजरात के **भीमदेव द्वितीय से अपनी पुत्री लीलादेवी** का विवाह किया।

उदयसिंह (1205-1257 ई.)

- इसने जालोर राज्य का विस्तार किया।
- उदयसिंह ने इल्तुतमिश के आधिपत्य वाले मण्डोर और नाडोल को हस्तगत किया तथा गुजरात के लवण प्रसाद को भी परास्त किया।
- उसने गोडवाड़ और मेवाड़ के कुछ भागों पर भी आधिपत्य स्थापित किया।

चाचिगदेव (1257-1282 ई.)

- इसने **महाराजाधिराज की उपाधि** धारण की।
- यह **नासिरुद्दीन महमूद व बलबन का** समकालीन था, मगर इन्होंने चाचिगदेव के राज्य पर आक्रमण करने का साहस नहीं किया।

सामंत सिंह (1282-1305 ई.)

- इसके शासन काल में जलालुद्दीन खिलजी 1291 ई. में सांचोर तक आ गया था, लेकिन सारंगदेव बाघेला की सहायता से वह उसे आगे बढ़ने से रोकने में सफल रहा।

कान्हड़देव (1305-1311 ई.)

- **स्रोत-**
    - कान्हड़ देव प्रबंध - पद्मनाभ।
    - विरमदेव सोनगरा री वात - पद्मनाभ।
    - नैणसी री ख्यात - मुहंणोंत नैणसी (राजस्थान का अबुल-फजल) ।
    - खाजईन-उल-फुतूह - आमिर खुसरो।
    - तारीख़-ए- फ़रिश्ता - फ़रिश्ता।

कान्हडदे द्वारा लड़े गए युद्ध

1. **सिवाना पर आक्रमण - 1308 (जालौर की कुंजी)**

- कान्हड़ देव (सातल एवं सोम) बनाम एन- उल-मुल्क- मुल्तानी(खिलजी का सेनापति)
- सिवाना का प्रथम साका
- भावले पवार के विश्वासघात के कारण
- सिवाना को खेराबाद नाम दिया

2. **जालोर पर आक्रमण 1311 ई.**

- कान्हड़ देव (जेता देवरा) बनाम अलाउद्दीन खिलजी (सेनापति- कमालुद्दीन कुर्ग)
- जालौर का शाका कान्हड देव और पुत्र विरमदेव के नेतृत्व में
- बिका दहिया सरदार के विश्वासघात के कारण
- जालोर को जलालाबाद नाम दिया

कान्हडदेव बनाम अलाउद्दीन खिलजी

- कारण-
    - गुजरात अभियान के समय रास्ता देने को लेकर।
    - खिलजी द्वारा हिन्दू शासकों कों खुली चुनौती देना।
    - विरमदेव और फिरोजा का प्रेम प्रसंग (नैणसी री ख्यात के अनुसार) ।
    - जालोर और सिवाना दुर्ग का सामरिक महत्व।
    - अलाउद्दीन की साम्राज्यवादी निति।
- कान्हड़देव जालोर के चौहान शासकों में सर्वाधिक शक्तिशाली था।

- अलाउद्दीन खिलजी की सेना के गुजरात आक्रमण के समय रास्ता देने को लेकर कान्हड़देव एवं अलाउद्दीन खिलजी के मध्य विरोध बढ़ गया।
- **1305** ई. में सुल्तान ने सेनानायक **एन -उल-मुल्क मुल्तानी** को ससैन्य जालोर भेजा। वह कान्हड़देव को समझा-बुझाकर दिल्ली ले आया।
- दिल्ली दरबार का वातावरण उसके स्वाभिमान के विरुद्ध था।
- फरिश्ता के अनुसार सुल्तान ने हिन्दू शासकों की शक्ति को चुनौती दी, जिसे कान्हड़देव सहन न कर सका और जालोर लौटकर युद्ध की तैयारियाँ शुरू कर दी।
- नैणसी ने युद्ध का कारण कान्हड़देव के पुत्र **वीरमदेव द्वारा सुल्तान की पुत्री फिरोजा से विवाह** करने से इनकार करना बताया है।
- **1308 ई. में सुल्तान ने** जालोर के शक्तिशाली किले **सिवाना पर** अधिकार कर लिया और उसका नाम '**खैराबाद**' रखा तथा **कमालुद्दीन कुर्ग को** वहाँ का प्रतिनिधि नियुक्त किया।

अलाउद्दीन खिलजी के विजय अभियान-
- रणथम्भौर (1301)- हम्मीर देव
- चित्तौडगढ़ (1303)- रावल रतन सिंह
- सिवाना (1308)- कान्हड़ देव
- जालौर (1311)- कान्हड़ देव एंव विरमदेव

- **'सातल और सोम'** (कान्हड़ देव के भतीजे) के नेतृत्व में सिवाना का पहला शाका संपन्न हुआ।
- **'भावले पँवार'** नामक व्यक्ति ने विश्वासघात किया।
- लेकिन फिर भी कान्हड़देव ने अधीनता स्वीकार नहीं की।
- **1311 ई.** में अलाउद्दीन ने जालोर पर घेरा डाल दिया, लेकिन उसे सफलता नहीं मिल सकी।
- अंत में कान्हड़देव के एक **दहिया सरदार बीका के विश्वासघात** के कारण दुर्ग पर अलाउद्दीन का अधिकार हो गया।
- कान्हड़देव लड़ता हुआ मारा गया और किले की महिलाओं ने जौहर किया।
- अलाउद्दीन ने जालोर जीतकर उसका नाम '**जलालाबाद**' कर दिया तथा वहाँ **अलाई तोपखाने की मस्जिद** का निर्माण करवाया।
- अखयराज के शासनकाल में **पद्मनाभ द्वारा 'कान्हड़दे प्रबंध'** की रचना की गई।
- 1311 ई. के युद्ध की जानकारी **पद्मनाभ द्वारा रचित ग्रंथ 'कान्हड़दे प्रबंध'** व "वीरमदेव सोनगरा री ख्यात" में किया गया हैं।

सिरोही के चौहान

राव लुम्बा

- सिरोही के चौहान वंश का संस्थापक **राव लुम्बा जालोर** की **देवड़ा शाखा** से सम्बन्धित था।
- इसलिए सिरोही के चौहानों को '**देवड़ा चौहान**' कहा जाता है।
- इसने 1311 ई. में **परमारों से आबू व चन्द्रावती छीनकर** अपनी स्वतन्त्र सत्ता स्थापित की।
- राव लुम्बा ने 1320 ई. में **अचलेश्वर मंदिर का जीर्णोद्धार** करवाया।
- 1321 ई. में लुम्बा की मृत्यु मानी जाती है। उसके उत्तराधिकारी तेजसिंह, कान्हड़देव, सामन्तसिंह, सलखा मृत्यु और रायमल थे।
- इन शासकों की राजधानी कभी चन्द्रावती और कभी अचलगढ़ रही।

सिरोही के चौहान
- राव लुम्बा
- शिवभान
- सहसमल
- लाखा
- जगमाल
- अखयराज
- सुरताण
- शिवसिंह

शिवभान

- रायमल के पुत्र **शिवभान ने सरणवा पहाड़ों** पर एक दुर्ग की स्थापना। की
- 1405 ई. में **शिवपुरी** नामक नगर बसाया।

सहसमल

- शिवभान के उत्तराधिकारी **सहसमल ने 1425 ई. में सिरोही बसाकर** उसे अपनी राजधानी बनाया।
- राणा कुम्भा ने सहसमल को परास्त किया।
- इस विजय के उपलक्ष में **अचलगढ़ दुर्ग ,कुम्भास्वामी मंदिर,ताल और राजप्रसाद का** निर्माण करवाया।

लाखा

- सहसमल का **उत्तराधिकारी लाखा** (1451 1483 ई.) हुआ।
- उसने मेवाड़ के शासक उदा के शासनकाल में आबू पर पुनः अधिकार कर लिया।
- इसने **पावागढ़ से कालिका की मूर्ति लाकर सिरोही में** स्थापित की और **लाखनाव तालाब का निर्माण** करवाया।

जगमाल

- लाखा का उत्तराधिकारी **जगमाल (1483-1523 ई.)** महत्वाकांक्षी शासक था।
- बहलोल लोदी के मेवाड़ आक्रमण के समय उसने **महाराणा रायमल** का साथ दिया।
- उसने जालोर के **मलिक मजीद खाँ को परास्त क**र उससे कर वसूल किया।
- मेवाड़ के कुंवर पृथ्वीराज को जहर की गोलियाँ देकर हत्या करने में इसका हाथ था।

- राव सुरताण रा कविता दुरसा आढा के द्वारा लिखी गई।

अखयराज

- सिरोही के **अखयराज देवड़ा ने 1527 ई. में खानवा के युद्ध में राणा सांगा का साथ** दिया।

दत्ताणी का युद्ध -

- 1583 ई. में सुरताण देवड़ा और अकबर के मध्य दत्ताणी (सिरोही) मैं ।
- अकबर की और से बीकानेर के रायसिंह और प्रताप के भाई जगमाल सिंह इस युद्ध में लडे ।
- जगमाल इस युदध में मारा गया।

सुरताण

- **सुरताण देवड़ा** ने **1575 ई. में अकबर की अधीनता** स्वीकार की तथा **दत्ताणी के युद्ध में प्रताप के भाई जगमाल को परास्त कर** मार दिया।

शिवसिंह

- सिरोही के **शिवसिंह ने 11 सितम्बर, 1823 को अंग्रेजों से संधि** कर ली।
- अंग्रेजो से **संधि करने वाली अंतिम रियासत**।

हाडौती (बूंदी) के चौहान

- देवा
- जैत्रा सिंह
- बरसिंह हाडा
- सुर्जन हाड़ा
- राव भोज
- राव रतन
- राव शत्रुशाल हाड़ा
- राव भावसिंह हाड़ा
- राव अनिरुद्ध
- राव राजा बुद्धसिंह
- राव दलसिंह
- राव उम्मेद सिंह
- विष्णुसिंह हाड़ा
- रामसिंह हाड़ा

हाडौती (बूँदी) के चौहान

- पहले यहाँ **मीणाओं का अधिकार** था।
  - जब से यहाँ **चौहानवंशीय हाड़ाओं** का आधिपत्य हुआ सम्पूर्ण इस क्षेत्र को **हाड़ौती** कहा जाने लगा।
- **बूंदा मीणा** के नाम पर बूँदी का नाम पड़ा।
- पहले यह **मेवाड़ के अधीन** था।
- देवसिंह ने 1241 ई. में **बूंदा मीणा** से इस भाग को छीनकर यहाँ **बूँदी राज्य की स्थापना** की।
  - उसने चम्बल के बायें तटवर्ती भाग को अपने राज्य की स्थापना की।

देवा

- **जेता मीणा** को 1241 ई. में हराकर उसने **बूँदी पर कब्ज़ा** कर लिया
- **चौहान वंश की हाड़ा शाखा** स्थापित की।

जैत्रा सिंह

- बम्बावाते के सामंत चौहान वंशीय के उत्तराधिकारी **समरसिंह हाड़ा ने 1264 ई. में कोटिया शाखा के भीलों** से कोटा को जीतकर अपने पुत्र जैत्र सिंह को दे दिया।
- 1274 ई. में उसने **कोटा को जीतकर बूँदी** के साथ मिला दिया।
- **कोटा किले** का निर्माण करवाया और प्रसिद्ध **गुलाब महल** का निर्माण करवाया।

बरसिंह हाड़ा

- 1354 ई. में **बूँदी का तारागढ़ दुर्ग** बनवाया।
- तारागढ़ अपने भित्ति चित्रों के लिए प्रसिद्ध है।

सुर्जन हाड़ा(1554-1585)

- 1569 ई. में मुगल सम्राट **अकबर की अधीनता** स्वीकार कर ली थी।
- **गौंड नरेश** को दिल्ली लाने के उपलक्ष में उसे सम्राट ने **राव राजा की उपाधि** दी तथा **5000 का मनसबदार** बना दिया सुर्जन **दानशीलता** के लिये बहुत प्रसिद्ध था।
- अकबर ने प्रसन्न होकर उसे **बूँदी के निकट 26 परगने** तथा **बनारस के निकट 26 परगने** देकर उसकी जागीर में वृद्धि की।
- उसने **द्वारकापुरी में रणछोड़जी का मंदिर** बनवाया।
- उसी के समय **चन्द्रशेखर ने 'सुर्जन चरित्र' और हम्मीर हठ** की रचना की।
- 1585 ई. में **काशी** में ही उसकी **मृत्यु** हो गयी।

राव भोज (1585-1607ई.)

- **सुर्जन हाड़ा की मृत्यु के बाद** 1585 ई. में उसका दूसरा पुत्र **राव भोज बूँदी का शासक** बना।
- उसने अकबर के समय **मुगलों की बड़ी सेवा** की ।
- अकबर ने उसकी **सेवाओं के बदले उसे अनेक बार पुरस्कृत** भी किया।

राव रतन (1607-1621 ई.)

- जहाँगीर ने उसे **सरबुन्दराय और रामराज** की उपाधियाँ प्रदान की।
- वह बहुत ही **न्यायप्रिय** राजा था।
- उसने अपने पुत्र गोपीनाथ की हत्या करने वाले ब्राह्मणों को भी दण्ड नहीं दिया क्योंकि उसका लड़का स्वयं दुराचारी था।
- 1621 में **राव रतन का निधन** हो गया।

राव शत्रुशाल हाड़ा (1621-1658 ई.)

- वह **शाहजहाँ का कृपा पात्र** था।
  - सम्राट ने उसे **राव पद की उपाधि** से विभूषित किया था।
- राव रतन का पोता और गोपीनाथ का पुत्र था।
  - 25 वर्ष की आयु में **बूँदी की राजगद्दी** पर बैठा।
- **मुगल अभियानों** में उसने अपूर्व वीरता का परिचय दिया।
- मुग़ल उत्तराधिकार के युद्ध में वह **सामूगढ़ के युद्ध में** शाही फौजों के साथ रहकर औरंगजेब के विरूद्ध लड़ा था।

- **युद्ध स्थल** में ही 1658 ई. में गोली लगने से उसका निधन हो गया।
- बूँदी में इसकी " **84 खम्भों की छतरी** " बनी हुई है जिसका **निर्माण राव अनिरुद्ध के भाई देवा** ने कराया था।

राव भावसिंह हाड़ा (1658-1681 ई.)

- राव शत्रुशाल के बाद उसका **ज्येष्ठ पुत्र भावसिंह** 1658 में **बूँदी का शासक** बना।
- 1660 ई. में **चाकण के घेरे में वह मिर्जा राजा जयसिंह की चढ़ाइयों में** शाही फौज में शामिल था।
- उसने बूँदी में अनेक इमारतें भी बनवाई और गाँव भी बसायें।

राव अनिरुद्ध (1682-1695 ई.)

- 1688 ई. में राजाराम जाट के विरुद्ध लड़े गये युद्ध में यह शाही सेना के साथ था।
- इससे पूर्व यह औरंगजेब के दक्षिण अभियानों में भी उसके साथ रहा तथा शाही बेगमों की मराठों से रक्षा करने पर सम्राट द्वारा पुरस्कृत भी किया गया ।
- अनिरुद्ध की पत्नी **रानी नाथावती ने बूँदी में 1699-1700 ई. में 'रानीजी की बावड़ी'** का निर्माण करवाया।
- इसका पुत्र **जोधसिंह हाड़ा 1706 ई.** में बूँदी के **जैतसागर तालाब में गणगौर के अवसर** पर नाव की सवारी करते समय **अपनी पत्नियों और गणगौर की प्रतिमा सहित डूब गया। तभी से 'हाड़ो ले डूब्यो गणगौर'** विख्यात हो गया।

राव राजा बुद्धसिंह (1695-1730 ई.)

- **पुस्तक- नेहतरंग।**
- औरंगजेब की मृत्यु के बाद हुए **उत्तराधिकार युद्ध (1707 ई.) में इसने बहादुरशाह** का साथ दिया।
- **बहादुरशाह** ने उसकी वीरता से प्रसन्न होकर उसे **'महाराव राणा'** का खिताब और कुछ परगने जागीर में दिये।
- 1729 ई. में **जयपुर नरेश जयसिंह** से झगड़ा हो जाने पर जयसिंह ने **बुद्धसिंह को हटाकर दलेलसिंह** को बूँदी की गद्दी पर बिठा दिया।
- यही 1734 ई. में **मराठों के राजस्थान में प्रवेश का कारण** बना, जब बुद्धसिंह की पत्नी **अमर कवंर** ने **होल्कर को राखी भेजकर बूँदी** आमंत्रित किया।
- बुद्धसिंह बेगूं चला गया और 1739 ई. में वहीं उसकी मृत्यु हुई।
- बुद्धसिंह के शासनकाल में **मुगल शासक फर्रुखसियर ने बूँदी का नाम बदलकर फर्रुखाबाद** कर दिया था।
- बूँदी पहली रियासत थी जिसकी आन्तरिक राजनीती में मराठों द्वारा हस्तक्षेप किया गया।

राव दलेलसिंह (1730-1748 ई.)

- सवाई जयसिंह द्वारा मनोनीत बूँदी का शासक।
- 1730 में ही **सवाई जयसिंह ने अपनी पुत्री कृष्णा** का विवाह इससे किया।
- इसने **1734 में हुरड़ा सम्मेलन** में भाग लिया।

राव उम्मेद सिंह (1749-1770 ई.)

- कोटा के शासक और मल्हारराव होल्कर की सहायता से इसने बूँदी की गद्दी प्राप्त की।
- वह मल्हारराव होल्कर को मामा कहता था, क्योंकि इसकी माता कछवाही रानी ने मल्हारराव के राखी बाँधी थी।
- इसने मल्हारराव होल्कर की पुत्री के विवाह में भाग लिया तथा छत्रपति रामराजा के राज्याभिषेक में सम्मिलित हुआ।
- यह **'श्री जी'** के नाम से जाना जाता था।
- उम्मेदसिंह ने बूँदी के **तारागढ़ किले में चित्रशाला का निर्माण** करवाया।
- इसने अपने जीवनकाल में **स्वयं की सोने की मूर्ति बनाकर उसका अंतिम संस्कार** करवाया।

विष्णुसिंह हाड़ा

- इसने **10 फरवरी, 1818 को अंग्रेजों से संधि कर** अधीनता स्वीकार कर ली।

रामसिंह हाड़ा

- 1857 ई. की क्रांति के दौरान बूँदी का एकमात्र शासक था, जिसने अंग्रेजों का सहयोग नहीं किया।
- इसी के शासनकाल में ठाकुर **बलवंतसिंह जयपुर से तीज की प्रतिमा बूँदी** लाये थे। उस समय जयपुर का शासक **रामसिंह द्वितीय** था।
- **रामसिंह के समय** प्रसिद्ध कवि, **वंश भास्कर के रचनाकार सूर्यमल्ल मीसण** हुए।
- बूँदी का **अंतिम शासक बहादुर सिंह हाड़ा** था।

कोटा के चौहान(हाड़ा राजवंश)

माधोसिंह (1631-1648 ई.)

कोटा के चौहान (हाडा राजवंश)

- माधोसिंह
- राव मुकंदसिंह हाड़ा
- राव जगतसिंह
- राव किशोरसिंह
- राव रामसिंह
- महाराव भीमसिंह
- महाराव अर्जुनसिंह
- राव दुर्जनशाल
- महाराव उम्मेदसिंह
- महाराव किशोरसिंह ॥
- महाराव रामसिंह |
- महाराव शत्रुशाल ॥
- महाराव उम्मेदसिंह ॥
- महाराव भीमसिंह

- बूँदी के **राव रतन सिंह का द्वितीय पुत्र** माधोसिंह ने 1631 ई. में कोटा राज्य की पृथक से नींव रखी।
- 1631 ई. में मुग़ल राजा शाहजहाँ ने कोटा को बूँदी से पृथक कर माधोसिंह को कोटा का शासक बनाया।
- **अस्त्र-शस्त्र विद्या में पारंगत** था और मुगल दरबार में उसका अच्छा सम्मान था।
- इसने खानेजहाँ लोदी (1631) और जुझारसिंह बुंदेला के (1635) विद्रोह को दबाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- शाहजहाँ द्वारा उसके **मनसब, खिलअल तथा जागीर में वृद्धि** की गई।

- मुगलों द्वारा लड़े जाने वाले दक्षिण, सीमांत प्रांत तथा **बल्ख** तथा **बदख्शां के युद्धों** में उसकी नियुक्ती हुई थी और इसमें उसने पूरी **वीरता और रण-कौशल का परिचय** दिया था।
- **बल्ख तथा बदख्शा** के अभियानों में **माधोसिंह** ने मुगल राज्य के गौरव को बढ़ाने में कोई कसर नहीं रखी थी।
- औरंगजेब भी **माधोसिंह के युद्ध कौशाल** से प्रभावित था।
  - **"बाद रफ़्तार"** नामक घोड़ा दिया गया औरंगजेब के द्वारा।
  - उसने एक छोटा सा **राज्य विरासत में प्राप्त** किया था।
  - अपने प्रयासों से बढ़ाकर उसने **43 परगनों में विभाजित** कर दिया।
- माधोसिंह ने अपने राज्य में अनेक इमारतें बनवायी।
- **पाटनपोल, कैथूनीपोल आदि का निर्माण** उसके समय किया गया।
- **1648 ई. में कोटा में 48 वर्ष** की अवस्था में **माधोसिंह की मृत्यु** हो गयी।

राव मुकंदसिंह हाड़ा (1648-1658 ई.)

- माधोसिंह का ज्येष्ठ पुत्र ।
- उसे **मुगल अभियानों** में अपने पिता के साथ जाने का अवसर भी मिला।
- राज्यारोहण के समय शाहजहाँ ने उसे **शाही खिलअत** से तथा **3000 के मनसब और 2000 सवार पद** से सम्मानित किया।
- उसने मुगलों के साथ **दक्षिण, मालवा और चित्तौड़ के युद्ध** में भी भाग लिया।
- उत्तराधिकारी के युद्ध में वह **धर्मत के युद्ध में औरंगजेब के विरूद्ध** लड़ा।
  - जिसमें वह अपने भाईयों सहित धराशायी हुआ।
- उसने **अबली मीणी का महल** कोटा में बनवाया।

राव जगतसिंह (1658-1683 ई.)

- यद्यपि औरंगजेब कोटा राज्य से प्रसन्न नहीं था परन्तु शासक बनने के बाद उसने **राजपूतों से सहयोग की नीति** अपनाते हुए उसे अपने दरबार में बुलवाया और **2000 का मनसब** दिया।
- 1680 ई. में औरंगजेब **बीजापुर और गोलकुण्डा के सुल्तानों** तथा मराठों को पराजित करने के इरादे से दक्षिण की ओर बढ़ा तो उस समय **जगतसिंह भी शाही सेना** के साथ था।
  - वहीं 1683 ई. में उसकी मृत्यु हो गयी।

राव किशोरसिंह (1684-1696ई.)

- माधोसिंह का सबसे छोटा पुत्र ।
- **नियुक्ति** - बीजापुर के युद्धों में औरंगजेब द्वारा ।
  - उसे **3000 का मनसबदार** बनाया और **खिलअत** देकर सम्मानित किया।
- मराठों के विरूद्ध भी उसने **अद्भभुत कौशल का प्रदर्शन** किया।
- दक्षिण के अभियान में ही 1696 ई. में उसकी मृत्यु हो गयी।
- **किशोर सागर तालाब** की मरम्मत करवायी और **किशोर विलास बाग** बनवाया।
- **किशनगंज नामक कस्बा** उसी ने बसाया था।
  - उसके पास **एक बड़े तालाब और महल** तथा किले का निर्माण भी करवाया।
- **चांदखेड़ी के जैन मंदिर** का निर्माण भी उसी के समय हुआ।

राव रामसिंह (1696-1707ई.)

- राव किशोरसिंह का द्वितीय पुत्र ।
- सम्राट ने उसे **1000 का मनसब** प्रदान किया।
- 1707 में **औरंगजेब की मृत्यु** के समय **उत्तराधिकारी के जाजव(जाजू) के युद्ध में रामसिंह ने आजम का साथ दिया।**
- **जाजव के युद्ध** में हरावल में रहते हुए रामसिंह मारा गया।
- उसके उदयपुर और **आमेर से अच्छे संबंध** थे।
- **रामपुरा बाजार, रामपुर दरवाजा, रामगंज, रावठा तालाब, किशोर सागर, सूरजपोल** आदि का निर्माण उसी के समय किया गया।

महाराव भीमसिंह (1707-1720 ई.)

- कोटा राज्य के सबसे **प्रभावशाली शासक**।
- **कोटा का नाम बदल कर नंदग्राम** कर दिया।
- बारां में **सांवरिया जी मंदिर** का निर्माण किया।
- सम्राट ने उसे **"महाराव" की पदवी से विभूषित** सम्मान दिया और 5000 मनसबदारी प्राप्त की तथा(कोटा का पहला शासक) ।
- **1707 ई. में वह कोटा राज्य का शासक** बना।
- फरुक्सियर के कहने पर उसने **बूँदी पर आक्रमण** किया और उसने **राज बुद्ध सिंह** को हरा दिया।
  - बूँदी का नाम बदल कर **फर्रुखाबाद** कर दिया।
- कोटा राज्य की एक **स्वतंत्र टकसाल स्थापित** की।
- **वैष्णव धर्म के अनुयायी** थे और राजकीय पत्रों में जयगोपाल लिखा जाता था।
- **स्थापत्य कला का विकास** - भीमविलास, श्री ब्रजनाथ जी का मंदिर, आशापुर जी का मंदिर, भीमगढ़ का किला ।

महाराव अर्जुनसिंह (1720-1723 ई.)

- भीमसिंह का पुत्र।
- सम्राट द्वारा विशेष महत्व नहीं दिया गया क्योंकि वह **सैयदों का समर्थक** था।

राव दुर्जनशाल (1723-1756 ई.)

- कोटा के शासकों में **अंतिम शासक** था **जिसके मुगलों से अच्छे संबंध** रहे।
- इसके समय **मुगलों का पराभव** प्रारम्भ हो गया था ओर **मराठों का प्रभाव** बढ़ रहा था।

- 1734 ई. में हुरडा सम्मेलन में भाग लिया।
- यद्यपि उसके राज्यारोपण के समय **मुहम्मदशाह ने टीके में हाथी, खिलअल तथा फरमान** भेजा।

महाराव उम्मेदसिंह (1770-1819 ई.)

- इसके शासनकाल में **झाला जालिमसिंह** की शक्ति और निरंकुशता चरम पर थी।
- इसके शासन में मराठों को धन देकर तथा कूटनीति से कोटा से दूर ही रखा।
- इसने **26 दिसम्बर, 1817** को अंग्रेजों से संधि कर उनकी अधीनता स्वीकार कर ली झाला जालिमसिंह ने अंग्रेजों से एक गुप्त संधि (1818 ई.) करके राज्य की प्रशासनिक सत्ता वंशानुगत रूप से अपने परिवार के लिए सुरक्षित कर ली।

संधि की शर्तें

- उम्मेद सिंह और उनके वंशजों का कोटा पर अधिकार बना रहेगा।
- जालिमसिंह और उनके वंशज पूर्ण अधिकार संपन्न दीवान बने रहेंगे।

महाराव किशोरसिंह द्वितीय(1819-1828 ई.)

- 1 अक्टूबर, 1821 को झाला जालिमसिंह और इसके मध्य **मांगरोल (बारां) का युद्ध** हुआ।
- जिसमें अंग्रेजों का सहयोग (कर्नल टॉड) जालिमसिंह को प्राप्त हुआ। फलतः किशोरसिंह युद्ध में परास्त हुआ।
- यह नाथद्वारा चला गया और कोटा राज्य **श्रीनाथजी को समर्पित** कर दिया।
- मेवाड़ महाराणा की मध्यस्थता के बाद वह दिसम्बर, 1821 में पुनः कोटा लौटा।
- इसके समय में झाला जालिमसिंह की मृत्यु (1824 ई.) के बाद उसका **पुत्र माधोसिंह कोटा** का फौजदार (1824-1833 ई.) बना।

महाराव रामसिंह द्वितीय (1828-1865 ई.)

- इसके शासनकाल में अंग्रेजों ने 1837 ई. में कोटा से 17 परगने (डॉ. एम. एल. शर्मा ने कोटा राज्य के इतिहास में 19 परगनों से झालावाड़ का निर्माण होना लिखा है।) अलग कर झालावाड़ राज्य की स्थापना की और झाला मदनसिंह को यहाँ का शासक बनाया।
- अंग्रेजों ने 1838 ई. में इस नई रियासत को मान्यता दी।
- **1857 ई. की क्रांति के दौरान** राव रामसिंह द्वितीय को **जयदयाल व मेहराब खान के साथ मिलकर जनता** ने महलों में नजरबन्द कर दिया।
- 1857 ई. के विप्लव की शांति के बाद **मेजर बर्टन की हत्या होने** से इसकी सलामी की तोपों की संख्या 17 से घटाकर 13 कर दी गई।

महाराव शत्रुशाल द्वितीय (1865-1888 ई.)

- अंग्रेज सरकार का कृपापात्र फैजअली खाँ प्रशासक रहा जो कोटा का दूसरा झाला सिद्ध हुआ।
- इसके सम्मान में नौ तोपें दागी जाती थी।
- प्रशासन पर ब्रिटिश सरकार का अधिकार था।
- महाराव **केवल नाममात्र का शासक** था।

महाराव उम्मेदसिंह द्वितीय (1888-1940 ई.)

- यह कोटड़ा जागीरदार **छगनसिंह का पुत्र** था जिसने मेयो कॉलेज में शिक्षा प्राप्त की।
- 1896 ई. में इसे शासन संबंधी अधिकार दिये गये।
- कोटा के **सत्रह परगने जो झालावाड़ को दिये थे उनमें से पंद्रह परगने 1 जनवरी, 1899 को पुनः कोटा** राज्य में मिला लिये गये।
- इसके शासनकाल में वायसराय **लॉर्ड कर्जन कोटा** आया। वह प्रथम वायसराय था, जो कोटा आया।
- इसने सदैव ब्रिटिश सरकार के प्रति निष्ठा व भक्ति का परिचय दिया।
- कोटा राज्य का **आधुनिकीकरण का कार्य** इसी के समय में शुरू हुआ।

महाराव भीमसिंह (1940-1948 ई.)

- कोटा **संयुक्त राजस्थान (25 मार्च, 1948) की राजधानी बना** और महाराव को संयुक्त राजस्थान का राजप्रमुख बनाया गया।
- यह कोटा का **अंतिम शासक** था।

झालावाड के चौहान

झाला मदन सिंह

- 1837 ई. में कोटा से अलग होकर झालावाड की स्थापना की।
- राजधानी झालरापाटन (चंद्रभागा नदी के किनारे) ।
- घंटियों का शहर झालरापाटन|
- शितलेश्वर महादेव मंदिर (झालरापाटन) - राजस्थान में सबसे
- प्राचीन तिथि युक्त मंदिर |

- ज़ालिम सिंह झाला का पोता
- झाला **मदन सिंह** को **कोटा का 1/3 भाग** दिया गया। और **1837 में** उन्होंने इसका **नाम बदलकर झालावाड़** कर दिया गया।
- 1838 ई. में अंग्रेजों ने इसे राज्य (रियासत) की मान्यता प्रदान की ।
- झालावाड़ में महाराजा भवानी सिंह ने **"भवानी नाट्यशाला" का निर्माण** करवाया ।

राजेन्द्र सिंह

- उन्होंने झालावाड़ में एक **काष्ठ प्रसाद** स्थापित किया।
- उन्होंने सभी **हरिजनों** के लिए **मंदिरों** के द्वार **खोल** दिए।